चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद
Established by the State Legislature Act 28 of 2014
recognized by UGC Act 1956 U/S 12 B & 2(f)

Public Relations Office

Newspaper: Hari Bhoomi **Date: 03-12-2022**

जींद। कार्यक्रम में भाग लेते गणमान्य लोग। फोटो : हरिभूमि

लोक साहित्य-जीवन मूल्यों के अथक साधक थे डॉ. भीम सिंह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

हिंदी विभाग चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय एवं लोकरंग धारा न्यास के संयुक्त तत्वावधान में जयघोष संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस सम्मान समारोह का आयोजन चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डा. रणपाल की अध्यक्षता में किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते कुलपति डा. रणपाल ने कहा कि हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में डा. भीम सिंह मलिक का योगदान अविस्मरणीय रहा है। उन्होंने न केवल हिंदी भाषा एवं साहित्य अपितु हरियाणवी भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति के प्रचार, प्रसार में भी अतुलनीय योगदान

■ सीआरएसयू में हुआ कार्यक्रम का आयोजन

दिया है। वे हरियाणवी लोक साहित्य, लोक संस्कृति और जीवन मूल्यों के अथक साधक थे। डा. भीम सिंह मलिक ने न केवल भारत अपितु इंग्लैंड और अमेरिका सहित लगभग 33 देशों की यात्राएं कर हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने बीबीसी लंदन से मानव शास्त्र विषय पर व्याख्यान भी प्रसारित किया जो अत्यंत प्रशंसनीय रहा था। उन्होंने विदेशी भूमि पर विभिन्न विश्वविद्यालयों, साहित्यिक संस्थानों, उच्च शिक्षण संस्थानों में अनेक व्याख्यान दिए तथा उनके दिए व्याख्यान विदेशों में बहुत प्रशंसनीय रहे। वह अद्भुत संयम के धनी थे। इस मौके पर अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद
Established by the State Legislature Act 28 of 2014
recognized by UGC Act 1956 U/S 12 B & 2(f)

Public Relations Office

Newspaper: Amar ujala **Date: 03-12-2022**

'साहित्य में डॉ. भीम सिंह का योगदान अमूल्य'

जयघोष संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में कुलपति रहे मुख्य अतिथि

आयोजित कार्यक्रम में मौजूद अतिथि व कुलपति। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

जींद। हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में डॉ. भीम सिंह मलिक का अविस्मरणीय योगदान रहा है। उन्होंने हरियाणवी बोली और हरियाणवी संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी अहम भूमिका निभाई थी। ये बातें चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय एवं लोकरंग धारा न्यास के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को आयोजित जयघोष संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में कुलपति डॉ. रणपाल सिंह ने कहीं।

कुलपति ने कहा कि डॉ. मलिक हरियाणवी लोक साहित्य, लोक संस्कृति और जीवन मूल्यों के अथक साधक थे। उन्होंने न केवल भारत अपितु इंग्लैंड और अमेरिका समेत लगभग 33 देशों की यात्राएं कर हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने बीबीसी लंदन के माध्यम से मानव शास्त्र विषय पर व्याख्यान भी दिया जो प्रशंसनीय रहा था। विदेशी भूमि पर विभिन्न विश्वविद्यालयों, साहित्यिक संस्थानों, उच्च शिक्षण संस्थानों में अनेक व्याख्यान दिए। निश्चित तौर पर डॉ. भीम सिंह मलिक हरियाणवी लोक साहित्य एवं संस्कृति के सच्चे साधक रहे हैं। मुख्यातिथि डॉ. सुदर्शन कुमार हुड्डा ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. भीम सिंह मलिक का अति महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने लोक साहित्य को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किए। उनको शिक्षा व सामाजिक विकास की भूख थी और मौका मिलते ही वह उसे पूरा करना चाहते थे। वे कहते थे पहले परिवार का विकास फिर पड़ोस, गांव, नगर, प्रदेश और देश का विकास करना चाहिए। अपनी जन्म भूमि का आदर वैसे ही करना चाहिए जिस प्रकार मां-बाप का करते हैं।

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद
Established by the State Legislature Act 28 of 2014
recognized by UGC Act 1956 U/S 12 B & 2(f)

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Bhaskar **Date: 03-12-2022**

कार्यक्रम • सीआरएसयू के हिंदी विभाग की ओर से संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह

हरियाणवी लोक साहित्य, लोक संस्कृति और जीवन मूल्यों के अथक साधक थे डॉ. भीम सिंह मलिक : कुलपति

भास्कर न्यूज | जींद

जींद. चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी में आयोजित सम्मान समारोह में मंच पर मौजूद अतिथि।

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग एवं लोकरंग धारा न्यास के तत्वावधान में जयघोष संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रणपाल सिंह ने की। कुलपति ने कहा कि हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में डॉ. भीम सिंह मलिक का योगदान अविस्मरणीय रहा है। उन्होंने न केवल हिंदी भाषा एवं साहित्य अपितु हरियाणवी भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी अतुलनीय योगदान दिया है। वे हरियाणवी लोक साहित्य, लोक संस्कृति और जीवन मूल्यों के अथक साधक थे।

डॉ. भीम सिंह मलिक ने न केवल भारत अपितु इंग्लैंड और अमेरिका सहित लगभग 33 देशों की यात्राएं कर हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने बीबीसी लंदन से मानव शास्त्र विषय पर व्याख्यान भी प्रसारित किया, जो अत्यंत प्रशंसनीय रहा था। उन्होंने विदेशी भूमि पर विभिन्न विश्वविद्यालयों, साहित्यिक संस्थानों, उच्च शिक्षण संस्थानों में अनेक व्याख्यान दिए और उनके दिए व्याख्यान विदेशों में बहुत प्रशंसनीय रहे। निश्चित तौर पर डॉ. भीम सिंह मलिक हरियाणवी लोक साहित्य एवं संस्कृति के सच्चे साधक रहे हैं।

एमडीयू रोहतक की राजनीतिक शास्त्र विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. सरला ने डॉ. भीम सिंह मलिक के व्यक्तित्व उनके साहित्य लेखन और हरियाणवी संस्कृति के विकास एवं समर्थन के बारे में जानकारी दी। मुख्य अतिथि डॉ. सुदर्शन कुमार हुड्डा ने कहा कि मेरी शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. भीम सिंह मलिक का अति महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने लोक साहित्य को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किए। डॉ. राममेहर सिंह ने ने कहा कि डॉ. भीम मलिक अनुपम, अनूठे, विलक्षण, बेजोड़ व्यक्ति थे। साहित्यकार डॉ. मंजुलता रेढू ने कहा कि डॉ. भीम सिंह मलिक उनके लिए उनके शिक्षक, शोध निर्देशक नहीं अपितु उनके जीवन में सबसे ऊंचे स्थान के अधिकारी हैं, पूज्य हैं, उनके हृदय में बसे हैं। उनका जिक्र आते ही मन मस्तिष्क के दृश्य पटल पर एक ऐसे व्यक्ति का चित्र उभरता है जो पूर्णतया साधा, शहद, सच्चा लोक संस्कृति में पगा एक नेक इंसान हैं। इस अवसर पर कुलसचिव प्रोफेसर लवलीन मोहन, हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. एसके सिन्हा नरहरि बांगड़, सेवा सिंह, राजकिशन नैन, डॉ. अजायब सिंह, डॉ. जसबीर सिंह, डॉ. जगदीश शर्मा राही, डॉ. सुनील काजल मौजूद रहे। हिंदी विभाग की शुरुआत इसी वर्ष सीआरएसयू में की गई। एमए हिंदी पूर्वार्ध के पाठ्यक्रम में हरियाणवी लोक साहित्य, हरियाणवी लोक नाट्य विषय को सम्मिलित किया गया है और इस विषय में उत्कृष्ट कार्य को देखते हुए एमए की छात्रा मीनू को 2100 रु. से सम्मानित भी किया गया।

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद
Established by the State Legislature Act 28 of 2014
recognized by UGC Act 1956 U/S 12 B & 2(f)

Public Relations Office

Newspaper: PUNJAB KESRI **Date: 03-12-2022**

हरियाणवी लोक साहित्य, लोक संस्कृति और जीवन मूल्यों के अथक साधक थे डॉ. भीम सिंह मलिक : वी.सी.

जींद, 2 दिसम्बर (स.ह.) : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग एवं लोकरंग धारा न्यास के संयुक्त तत्वावधान में जयघोष संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस सम्मान समारोह का आयोजन चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के वीसी डॉ. रणपाल सिंह की अध्यक्षता में किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए वी.सी. डॉ. रणपाल सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में डॉ. भीम सिंह मलिक का योगदान अविस्मरणीय रहा है। उन्होंने न केवल हिंदी भाषा एवं साहित्य अपितु हरियाणवी भाषा एवं हरियाणवी संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी अतुलनीय योगदान दिया है। वे हरियाणवी लोक साहित्य, लोक संस्कृति और जीवन मूल्यों के अथक साधक थे।

डॉ. भीम सिंह मलिक ने न केवल भारत अपितु इंग्लैंड और अमेरिका सहित लगभग 33 देशों की यात्राएं कर हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने बीबीसी लंदन से मानव शास्त्र विषय पर व्याख्यान भी प्रसारित किया जो अत्यंत प्रशंसनीय रहा था। उन्होंने विदेशी भूमि पर विभिन्न विश्वविद्यालयों, साहित्यिक संस्थानों, उच्च शिक्षण संस्थानों में अनेक व्याख्यान दिए तथा उनके दिए व्याख्यान विदेशों में बहुत प्रशंसनीय रहे। निश्चित तौर पर डॉ. भीम सिंह मलिक हरियाणवी लोक साहित्य एवं संस्कृति के सच्चे साधक रहे हैं। कार्यक्रम में गरिमापूर्ण सानिध्य के रूप में प्रोफेसर सरला ने अपनी भूमिका निभाई।

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग एवं लोकरंग धारा न्यास के संयुक्त तत्वावधान में जयघोष संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में मौजूद पदाधिकारी। (ऋषि)

प्रो. सरला मलिक महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक में राजनीति शास्त्र विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष रही हैं उन्होंने डॉ. भीम सिंह मलिक के व्यक्तित्व उनके साहित्य लेखन और हरियाणवी संस्कृति के विकास एवं समर्थन के बारे में डॉ. भीम सिंह मलिक जी की तत्परता और निरंतर हरियाणवी संस्कृति के संरक्षण हेतु उनकी संकल्पना के बारे में जानकारी दी। मुख्य अतिथि डॉ. सुदर्शन कुमार हुड्डा ने कहा कि मेरी शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. भीम सिंह मलिक जी का अति महत्वपूर्ण योगदान है।

डॉ. राममेहर सिंह ने कहा कि डॉ. भीम मलिक अनुपम, अनूठे, विलक्षण, बेजोड़ व्यक्ति थे। साहित्यकार डॉ. मंजूलता रेढू ने संगोष्ठी में भाव स्वागत किया और कहा कि डॉ. भीम सिंह मलिक उनके लिए उनके शिक्षक, शोध निर्देशक नहीं अपितु उनके जीवन में सबसे ऊंचे स्थान के अधिकारी हैं पूज्य हैं उनके हृदय में बसे हैं। हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. सिन्हा ने मंच के माध्यम से सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में सम्मानित अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर लवलीन मोहन ने शिरकत की।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि नरहरि बांगड़, सेवा सिंह, राजकिशन नैन ने हरियाणवी भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार में डॉ. भीम सिंह मलिक के योगदान विषय पर अपने विचार रखे। वक्ता के रूप में डॉ. अजायब सिंह ने भीम सिंह मलिक के साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में योगदान करें अपने विचार रखे। मुख्य वक्ता डॉ. जसबीर सिंह ने कहा कि भीमसेन हरियाणवी भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए सदैव अविस्मरणीय रहेंगे और कहा कि आज आवश्यकता है। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. जगदीश शर्मा राही ने किया।

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद
Established by the State Legislature Act 28 of 2014
recognized by UGC Act 1956 U/S 12 B & 2(f)

Public Relations Office

Newspaper: Dainik jagran **Date: 03-12-2022**

हिंदी भाषा के विकास में डा. भीम सिंह मलिक का योगदान अविस्मरणीय

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय एवं लोकरंग धारा न्यास के संयुक्त तत्वावधान में जयघोष संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह आयोजित

जागरण संवाददाता, जींद : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय जींद एवं लोकरंग धारा न्यास के संयुक्त तत्वावधान में जयघोष संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया। सम्मान समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डा. रणपाल सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में डा. भीम सिंह मलिक का योगदान अविस्मरणीय रहा है। उन्होंने न केवल हिंदी भाषा एवं साहित्य अपितु हरियाणवीं भाषा एवं हरियाणवीं संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी अतुलनीय योगदान दिया है। वे हरियाणवीं लोक साहित्य, लोक संस्कृति और जीवन मूल्यों के अथक साधक थे। डा. भीम सिंह मलिक ने न केवल भारत अपितु इंग्लैंड और अमेरिका सहित लगभग 33 देशों की यात्राएं कर हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कार्यक्रम में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक में राजनीति शास्त्र विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सरला मलिक ने डा. भीम सिंह मलिक के व्यक्तित्व उनके साहित्य लेखन और हरियाणवीं संस्कृति के विकास एवं समर्थन के बारे में डा. भीम सिंह मलिक की तत्परता और निरंतर हरियाणवीं संस्कृति के संरक्षण के लिए उनकी संकल्पना के बारे में जानकारी दी। मुख्य अतिथि डा. सुदर्शन कुमार हुड्डा ने कहा कि मेरी शिक्षा के क्षेत्र में डा. भीम सिंह मलिक का अति महत्वपूर्ण योगदान है उन्होंने लोक साहित्य को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किए।